SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

प्रति माओवादी युद्धकर्म में सुरक्षा बलों की भूमिका का विश्लेष्णात्मक अध्ययन (अबूझमाड़ के विशेष सन्दर्भ में)

गिरीश कांत पाण्डेय, Ph.D., D. Litt., **प्रवीण कुमार कड़वे,** Ph.D., **सीपज मिश्रा,** शोधार्थी
रक्षा अध्ययन विभाग
शासकीय नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors

गिरीश कांत पाण्डेय, Ph.D., D. Litt.
प्रवीण कुमार कड़वे, Ph.D.
सीपज मिश्रा

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/12/2023
Revised on : -----
Accepted on : 27/02/2024
Overall Similarity : 05% on 19/02/2024

शोध सार

राष्ट्र की एकता व अखंडता को बनाए रखने में आंतरिक सुरक्षा का योगदान बहुत महत्वपूर्ण होता है। ऐसे में छत्तीसगढ़ जिस प्रमुख आतंरिक सुरक्षा के चुनौती का सामना कर रहा है, वह है माओवाद। माओवादियों की गुरिल्ला युद्धकर्म रणनीतियों का सामना हमारे सुरक्षा बल 'प्रति माओवादी युद्धकर्म' द्वारा करते हैं। प्रति माओवादी युद्धकर्म की सफलता और असफलता, क्षेत्र की भौगोलिक बनावट, सुरक्षा बलों का प्रशिक्षण, जन–सहयोग, खुफिया तंत्र की सुदृढ़ता व एक समग्र योजना पर निर्भर करती हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से प्रति माओवादी युद्धकर्म में कार्यरत सुरक्षा बलों की भूमिका, चुनौतियां एवं केंद्रीय सुरक्षा बल तथा राज्य पुलिस के मध्य समन्वय का विश्लेष्णात्मक मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द

प्रति माओवादी युद्धकर्म, सुरक्षा बल, अबूझमाड़, आंतरिक सुरक्षा, जनसहयोग, समग्र योजना.

प्रस्तावना

माओवादियों का उद्देश्य है संविधान और लोकतंत्र को हटाकार, उसके स्थान पर माओ के सिद्धांत पर चलने वाली व्यवस्था स्थापित करना। इसलिए, माओवादी भारत की लोकतांत्रिक सत्ता व प्रशासन व्यवस्था का हमेशा से हिंसापूर्ण विरोध करते आए है। दुर्भाग्यवश छत्तीसगढ़ राज्य जो अपनी हरियाली व कृषि प्रधानता के नाम से जाना जाता था, वर्तमान में सर्वाधिक माओवाद प्रभावित राज्य के नाम से राष्ट्र ही नहीं पूरे विश्व पटल में पहचान हो रहा है। माओवादी जिस युद्ध के प्रकार का उपयोग करते हैं उसे गुरिल्ला या छापामार युद्धकला कहा जाता हैं। इसके जवाब में सुरक्षा बल प्रतिमाओवादी युद्धकला

का क्रियान्वयन करते हैं। गुरिल्ला कार्यवाहियो के विरुद्ध सुरक्षा बलों को मुख्य रूप से भौगोलिक तत्व का ज्ञान व प्रशिक्षण होना चाहिए।

Chhattisgarh Maoist Affected Areas

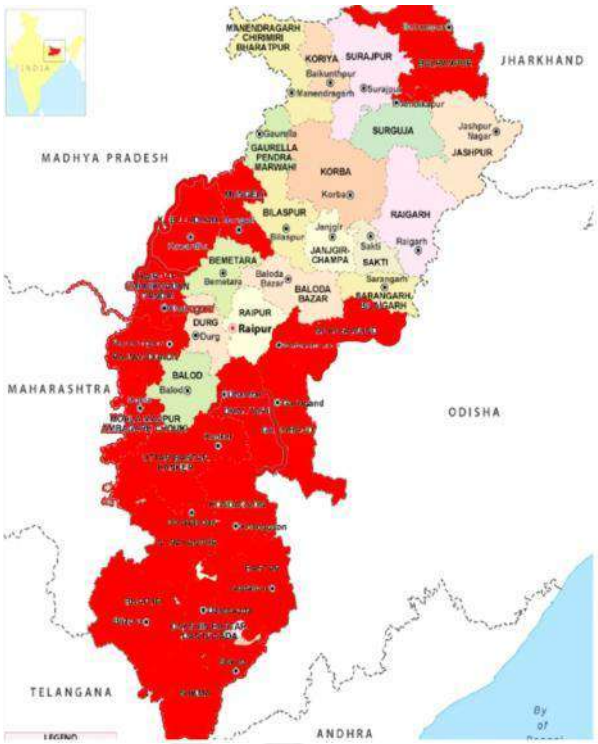

*(**Source:** https://www.mapsofindia.com/maps/chhattisgarh/chhattisgarh.htm#)*

अबूझमाड़ का क्षेत्र भौगोलिक रूप से अलग–थलग और आमतौर पर दुर्गम क्षेत्र है। लगभग 3900 वर्ग किलोमीटर में फैले अबूझमाड़ के जंगलों को माओवादियों के लिए सुरक्षित गढ़ माना जाता है। सामान्यतः अबूझमाड़ अपने नाम की तरह ही आज तक एक अबूझ पहेली बना हुआ है। यहां जंगल इतना घना है कि सरकार और सुरक्षा कर्मी तो क्या, धूप भी जमीन तक नहीं पहुँच पाती है, लेकिन माओवादियों की तो जैसे यहां सरकार चलती है। नारायणपुर, बीजापुर और दंतेवाड़ा जिले का पहाड़ी जंगली इलाका अबूझमाड़ कहलाता है। यहां से गुजरने वाली इंद्रावती नदी अबूझमाड़ को बस्तर के दूसरे क्षेत्रों से अलग करती है और छोटी–छोटी नदियों के बीच कई गांव बसे हुए है। यहाँ नागरिक प्रशासन की उपस्थिति अब भी नगण्य बनी हुए है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) और इसकी सैन्य इकाई 'पीपुल्स लिबरेशन गुरिल्ला आर्मी' यहाँ समानांतर सरकार चलाते हैं, वे इस गढ़ को मुक्त क्षेत्र कहकर बुलाते हैं। यहां से माओवादी आसपास के राज्यों जैसे आंध्र प्रदेश, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश तक फैल जाते हैं। विभिन्न राज्यों की सरकारों और सुरक्षा बलों में आपसी तालमेल ना होने के कारण माओवादी सीमा पार कर दूसरे राज्य पहुँच जाते है।

भौगोलिक स्थिति

अबूझमाड़, भारत के छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित है। यह बस्तर अंचल के नारायणपुर, दंतेवाड़ा और बीजापुर जिलों को समाहित करते हुए 3900 वर्ग किलोमीटर में फैला एक पहाड़ी वन क्षेत्र है। यह स्थान भौगोलिक रूप से दुर्गम और पृथक है। यह क्षेत्र एक प्रस्तावित बायोस्फियर रिजर्व है।

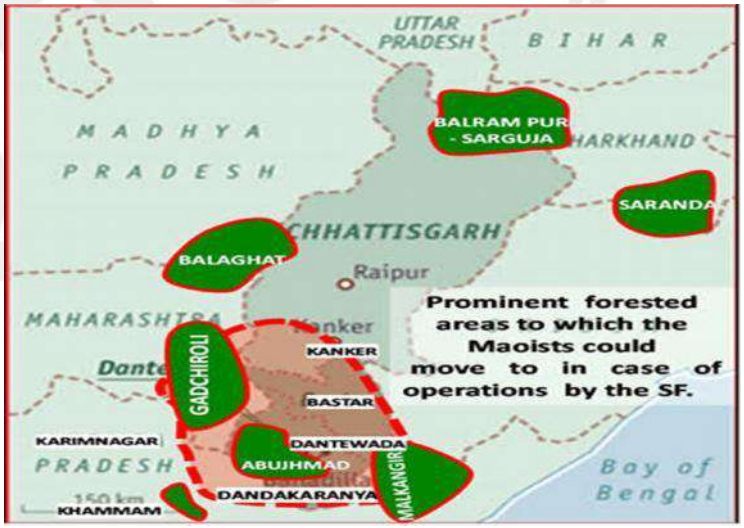

*(**Source:** Map from the author's book "Red Revolutio 2020 and Beyond: Strategic Challenges to Resolve Naxalism". Page 51)*

अबूझमाड़ की पहाड़ियॉ

दंडकारण्य के मध्य पश्चिमी भाग में अबूझमाड़ की पहाड़ियॉ विस्तृत है, जिसका अधिकांश भाग नारायणपुर के दक्षिण पश्चिम भाग में पाया जाता है तथा शेष भाग दक्षिण की ओर बीजापुर की उत्तरी पट्टी है। नारायणपुर से दक्षिण की ओर इस पहाड़ी क्षेत्र की लंबाई 100 किलोमीटर तथा चौड़ाई 60 किलोमीटर है। अबूझमाड़ का स्थानीय उच्चावच 150 से 300 मीटर के मध्य है। इसके उत्तर पूर्व में रावघाट पहाड़ी घोड़े के नाल के सदृश्य फैला है। इस क्षेत्र में लगभग 14 चोटियाँ है, जिनमे सबसे ऊँची चोटी टहनार गाँव के समीप 999.6 मीटर ऊँची है। इंद्रावती नदी पश्चिम की ओर अबूझमाड़ की पहाड़ियों की दक्षिणी सीमा बनाती है तथा दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। इंद्रावती नदी के दोनों तटों पर कई सहायक नदियाँ मिलती है। उत्तर में नारंगी, बोरथिग, उत्तर पूर्व पठार की ओर गुडरा नदी अबूझमाड़ के पूर्वी कगार का जल लाती है। निबरा नदी उत्तर अबूझमाड़ को पारकर तथा पश्चिम की ओर प्रवाहित होकर अंत में दक्षिण की ओर मुड़कर इंद्रावती से मिलती है। इंद्रावती की सहायक कोंटरी नदी, अबूझमाड़ पहाड़ी, भानु प्रतापपुर, अंतागढ़ मैदान में प्रवाहित होती है। दक्षिण तट की सहायक नदियाँ दंतेवाड़ा, बरूदी और चिंतावगु छोटी नदियाँ है। इंद्रावती को बस्तर दंडकारण की जीवन रेखा कहा जाता है। अबूझमाड़ इसके नाम से ही स्पष्ट है अबूझ मतलब जिसको बूझना संभव न हो और माड़ यानी गहरी घाटियां और पहाड़ यह एक अत्यंत दुर्गम क्षेत्र है।

प्रति माओवादी युद्धकर्म

प्रति माओवादी युद्धकर्म से तात्पर्य गुरिल्ला विरोधी कार्यवाही के क्रियान्वयन से है। प्रति माओवादी युद्धकर्म में सुरक्षा बलों की भूमिका अधोलिखित निम्न आधारभूत तत्वों के ऊपर आधारित होता है:

1. प्रति माओवादी युद्धकर्म हेतु प्रशिक्षण।
2. स्थानीय जन–सहयोग।
3. आसूचना प्रणाली की सुदृढ़ता।
4. केंद्रीय सुरक्षा बलों एवं राज्य पुलिस के मध्य समन्वय स्थापित करना।
5. समग्र योजना।

प्रति माओवादी युद्धकर्म हेतु प्रशिक्षण

प्रति माओवादी कार्यवाही के लिए गठित सुरक्षा बल चाहे वे केंद्रीय सुरक्षा बल हो या राज्य पुलिस दोनों ही सुप्रशिक्षित होनी चाहिए। प्रति माओवादी युद्धकर्म में प्रशिक्षण प्राप्त हेतु विश्व प्रसिद्ध 'काउंटर इंसरजेंसी एण्ड जंगल वाफेयर स्कूल' मिजोरम के वैरेंगते में स्थापित है व राज्य में भी कांकेर में 'प्रति आंतकवादी व जंगल वॉरफेयर कॉलेज' इसका प्रशिक्षण देता है।

- काउंटर–इंटरजेंसी एंड जंगल वॉरफेयर स्कूल, वैरेंगते (मिजोरम)।
- काउंटर टेररिज्म एंड जंगल वॉरफेयर कॉलेज, कांकेर (छत्तीसगढ़)।

काउंटर–इंटरजेंसी एंड जंगल वॉरफेयर स्कूल, वैरेंगते (मिजोरम)

*(**Source:** https://images.app.goo.gl/bNFV5HV7sCh3kDwq9)*

इन प्रशिक्षण संस्थानों में सुरक्षा बलों को इस प्रकार का अभ्यास कराया जाता है, जिससे सैनिक जंगलों में दुश्मनों का सामना आसानी से कर सके इन्हे गुरिल्ला से गुरिल्ला की तरह लड़ना सिखाया जाता है जिसके तहत गुरिल्ला कार्यवाही से सम्बंधित सभी गतिविधियों जैसे गतिशीलता, पहल, एम्बुश, चकित करने वाला आक्रमण, छिपाव तथा छितराव की जानकारी दी जाती है। भौतिक बनावट के अनुरूप ढलना, जल व भोजन हेतु जंगलों पर निर्भर रहना भी इस प्रशिक्षण का हिस्सा है। प्रति माओवादी संक्रियाओं की सफलता की कुंजी गतिशीलता है।

छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले में माओवादी एवं प्रतिमाओवादी गतिविधियों में हुई मृत्यु

Year	Incidents of Killing	Civilians	Security Forces	Terrorists/Insurgents /Extremists	Not Specified	Total
2013	5	0	1	5	0	6
2014	6	1	1	11	0	13
2015	6	2	2	3	0	7
2016	12	4	1	16	0	21
2017	9	3	1	22	0	26
2018	8	3	5	8	0	16
2019	2	0	1	6	0	7
2020	5	1	2	2	0	5
2021	15	6	11	3	0	20
2022	5	1	2	1	0	4
2023	10	9	1	1	0	11
Total	**83**	**30**	**28**	**78**	**0**	**136**

*(**Source:** www.satp.org)*

स्थानीय जन सहयोग

जिस प्रकार माओवादी युद्ध की सफलता के लिए जन सहयोग आवश्यक होता है। ठीक उसी प्रकार प्रति माओवादी युद्ध के लिए भी जन सहयोग की अति आवश्यकता होती है। अतः प्रति माओवादी युद्ध के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व जनता का विश्वास और सहयोग प्राप्त करना होता है। यदि एक बार जन विश्वास प्राप्त कर लिया जाए तो माओवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाना काफी सरल हो जाता है। जन विश्वास अर्जित करके माओवादियों को जन–सहयोग प्राप्त करने से रोका जा सकता है क्योंकि माओवादियों को शरण–स्थल, भोजन, वस्त्र आवश्यक साज–समान तथा शत्रु के बारे में सूचना प्राप्त करने का प्रमुख स्रोत सामान्य जनता ही होती है। अतः यदि उन्हें जन–सहयोग से विरत कर दिया जाए तो माओवादी पंगु हो जाते हैं। जनता में माओवादियों के प्रति अविश्वास एवं घृणा की भावना उत्पन्न करके ऐसा किया जा सकता है। लेकिन यह तब तक संभव नहीं है, जब तक की सरकार सामान्य जनता को यह विश्वास नहीं दिला देती कि वह उनके हितों की रक्षा करने में पूरी तरह से समर्थ एवं सक्षम है। इसके लिए न्याय संगत एवं सक्षम सरकार का होना अत्यंत आवश्यक है।

सामुदायिक पुलिसिंग के माध्यम से आम जनता का विश्वास जीत सकते है, यह पुलिस और जनता के बीच विश्वास की कमी को कम करने में मदद करता है क्योंकि इसके लिए सुरक्षा बलों को अपराध की रोकथाम और अपराध का पता लगाने, सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने तथा स्थानीय संघर्षों को हल करने हेतु समुदाय के साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता होती है, जिसका उद्देश्य माओवादी क्षेत्र में शांति स्थापना करना होता है।

आसूचना प्रणाली की सुदृढ़ता

माओवादी गतिविधियों का सामना करने के लिए एक सुदृढ़ आसूचना व्यवस्था की महती आवश्यकता होती है। कोई भी सरकार या सुरक्षा बल बिना एक परिपक्व आसूचना प्रणाली के माओवादी युद्धकर्म को कुचलने में सफल नहीं हो सकती। आसूचना जानकारी प्राप्त करने के कुछ निम्न साधन हैः

1. स्थानीय जन।
2. आत्मसमर्पित माओवादी।
3. यु. ए. वी., ड्रोन इत्यादि।
4. इलेक्ट्रॉनिक आसूचना।

आसूचना जानकारी प्राप्त करने के लिए स्थानीय जन सबसे कारगर होता है, सरकार द्वारा जन–समर्थन प्राप्त करने का एक सशक्त साधन जनता के बीच मनोवैज्ञानिक संक्रियाओं का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन करना भी है, जिसके अंतर्गत सत्यता पर आधारित प्रोपेगेंडा, समाचार पत्र, एवं अन्य मुद्रित सामग्री, रेडियो प्रसारण, चलते फिरते चलचित्र तथा स्थानीय नेताओं के प्रभाव का प्रयोग करके जनता में सरकार व सुरक्षा बलों के प्रति विश्वास व आस्था तथा विद्रोहियों के प्रति अविश्वास और घृणा पैदा करने का प्रयास करना चाहिए। इसके अतिरिक्त आत्मसमर्पित माओवादियों द्वारा भी हमें माओवादियों की आसूचना जानकारी प्राप्त हो सकती है।

मानव रहित वायु वाहनों, ड्रोन एवं इलेक्ट्रॉनिक आसूचना के आगमन के साथ, हवाई निगरानी अधिक प्रभावित हो गई है। आधुनिक यूएवी प्लेटफार्म में लंबे समय तक हवा में रहने की क्षमता होती है। वह अत्याधुनिक निगरानी उपकरणों से लैस है जो दूर दराज के ग्राउंड स्टेशनों को बड़े क्षेत्र की वास्तविक समय और स्पष्ट छवि प्रदान करने की क्षमता रखते हैं। यह ड्रोन माओवादी क्षेत्रों में जानकारी प्राप्त करने में काफी उपयोगी सिद्ध हो सकते है। इन सभी आसूचना जानकारी के माध्यम से सुरक्षा बलों पर होने वाले हमले रोके जा सकते है, तथा माओवादियों की गतिविधियों का पता भी लगाया जा सकता है।

केंद्रीय सुरक्षा बल एवं राज्य पुलिस के मध्य समन्वय स्थापित करना

प्रति माओवादी युद्धकर्म के नेतृत्व को जिस कठिन और जटिल समस्या का सामना करना पड़ता है, वह है सामंजस्य की समस्या। इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि केंद्रीय सुरक्षा बल एवं स्थानीय राज्य पुलिस दोनों के अपने अपने शक्ति स्त्रोत होते है, दोनों की अपनी भूमिका होती है। राज्य की पुलिस प्रति माओवादी युद्धकर्म में अग्रणीय भूमिका निभायें तथा केंद्रीय सुरक्षा बल उसकी सहायता में हो। केंद्रीय सुरक्षा बल के जवान उस भौगोलिक बनावट से उतने अधिक परिचित नहीं होते जितने राज्य पुलिस के होते है, साथ ही स्थानीय भाषा का ज्ञान नहीं होता है। राज्य पुलिस और आम जनता के मध्य अधिक विश्वास होता है, जिससे वो आसानी से सूचनाओं का आदान–प्रदान कर सकते है। रोड ओपनिंग पार्टी की सुरक्षा में भी स्थानीय पुलिस को होना चाहिए। केंद्रीय सुरक्षा बल जो विशेष रूप से प्रति माओवादी युद्धकर्म से लड़ने हेतु बनाई गयी है उसे स्थानीय पुलिस का पूरा सहयोग मिलना चाहिए, केंद्रीय सुरक्षा बल एवं स्थानीय पुलिस की रचनात्मक योग्यता व सूझबूझ द्वारा ही संयुक्त संगठन बनाकर प्रति माओवादी युद्धकर्म के उद्देश्य की पूर्ति हेतु साथ–साथ कार्य करना संभव हो सकता है।

बस्तर में पदस्थ अधिकारियों के साथ

समग्र योजना

प्रति माओवादी युद्धकर्म हेतु आवश्यक रूप से एक समग्र योजना होनी चाहिए। इसके लिए केंद्र और राज्य सरकार आपस में बैठकर नीति का निर्धारण करें, जिसमें केवल सुरक्षा–उपाय और सैनिक संक्रियाएं ही नहीं होनी चाहिए वरन् राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा प्रशासनिक उपाय भी सम्मिलित होने चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के कार्य और दायित्व को स्पष्ट किया जाना चाहिए। समग्र योजना के तहत एक ऐसे बल का निर्माण होना चाहिए जो

राज्यों की सीमा से परे जाकर भी प्रति माओवादी कार्यवाहियों को अंजाम दे सके अर्थात् राज्य की सीमाओं का बंधन ना हो क्योंकि माओवादी एक राज्य में घटना को अंजाम देने के बाद सीमा पार कर दूसरे राज्य में शरण ले लेते है।

इसके अतिरिक्त स्पष्ट राजनीतिक उद्देश्य प्रति माओवादी युद्धकर्म को समाप्त करने हेतु आवश्यक होगा, आर्थिक रूप से जीवन सक्षम, स्थाई जनता को संतोष प्रदान करने वाले एक लोकतांत्रिक देश का अनुरक्षण। इसका विश्वास दिलाने के लिए सरकारी गतिविधियों में पुनः प्रतिष्ठा तथा स्थिरता लाने वाले कानून व व्यवस्था की पुनः स्थापना तथा आर्थिक स्रोतों का समान वितरण आदि आवश्यक होता है। इससे जन विश्वास अर्जित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

प्रति माओवादी युद्धकर्म में प्रयुक्त होने वाली भौगोलिक स्थिति के महत्व को हम नकार नहीं सकते हैं। प्रति माओवादी युद्धकर्म में केंद्रीय सुरक्षा बल एवं स्थानीय राज्य पुलिस का आपसी समन्वय होना अति आवश्यक है, जिसमें राज्य पुलिस की भूमिका अग्रणीय होनी चाहिए तथा उन्हें और सशक्त बनाना चाहिए। सुरक्षा बलों व जन–सहयोग के आपसी तालमेल से माओवादी युद्धकर्म का प्रभाव अबूझमाड़ में शून्य हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. https://youtu.be/uH2vnBeKzcg?si=7EVoJxIIlkcL9n3. accessed : 11-10-2023
2. https://m.economictimes.com/news/politics-and-nation/this-region-in-india-doesnt-exist-on-map-has-no-govt-administration/articleshow/63248101.cms. accessed : 12-10-2023
3. https://www.jagran.com/uttar-pradesh/bareilly-city-for-internal-security-gorilla-war-is-better-option-10872131.html. accessed : 12-10-2023
4. https://images.app.goo.gl/ay8FXU64h35wfCvQ7. accessed : 12-10-2023
5. https://images.app.goo.gl/bNFV5HV7sCh3kDwq9. accessed : 12-10-2023
6. https://www.mha.gov.in/hi/divisionofmha/%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%AA%E0%A4%82%E0%A4%A5%E0%A5%80%E0%A4%89%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%AD%E0%A4%BE% E0%A4%97. accessed : 12-10-2023.
7. भारत सरकार – गृह मंत्रालय, https://www.mha.gov.in/sites/default/files/AnnualReportHindi_11102023.pdf. accessed : 12-10-2023
8. उत्तरः माओवाद माओत्से तुंग द्वारा विकसित साम्यवाद का एक रूप है यह सशस्त्र।https://www.mha.gov.in/sites/default/files/2023-02/LWEDIVISIONhindi_17022023.pdf. accessed : 12-10-2023
9. District Narayanpur, https://narayanpur.gov.in/. accessed : 12-12-2023
10. Home Department - गृह विभाग https://home.cg.gov.in/HContactUs.html. accessed : 12-12-2023
11. https://www.satp.org/datasheet-terrorist-attack/fatalities/india-maoistinsgency-chhattisgarh-narayanpur. accessed : 13-12-2023

****